डेयरी फार्मिंग जागरूकता कार्यक्रम

एन ई एक्स-001

4 गाभिन पशु एवं बछड़ा-बछिया की देखभाल

– प्रायोजक
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

कृषि विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

— इन्दिरा गांधी

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

— Indira Gandhi

कोड : एन.इ.एक्स. - 001 इकाई 4

पशुपालकों एवं ग्रामीणजनों के लिए विशेष

डेयरी फार्मिंग जागरूकता कार्यक्रम

प्रायोजक

ग्रामीण विकास मंत्रालय

भारत सरकार

कृषि विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110 068

संचालन समिति

प्रो. एच.पी. दीक्षित
कुलपति
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. एस. सी. गर्ग
समकुलपति
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. पंजाब सिंह
प्रोफेसर
कृषि विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति

डॉ. एस. पी. अग्रवाल
वरिष्ठ वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त)
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार

डॉ. एल. पी. नौटियाल
प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त)
आई.वी.आर.आई. इज्जतनगर
बरेली (उ.प्र.)

डॉ. राजबीर सिंह
प्रमुख डेयरी अर्थशास्त्र
एन.डी.आर.आई.
करनाल (हरियाणा)

डॉ. एच.सी. जोशी
प्रधान वैज्ञानिक
आई.वी.आर.आई.,
बरेली (उ.प्र.)

डॉ. के. पी. मलिक
प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त)
आई.वी.आर.आई.
इज्जतनगर, बरेली (उ.प्र.)

डॉ. टी. के. वली
प्रधान वैज्ञानिक
एन.डी.आर.आई.
करनाल (हरियाणा)

डॉ. रामचन्द्र
प्रमुख डेयरी प्रसार विभाग
एन.डी.आर.आई.
करनाल (हरियाणा)

डॉ. के.आर. त्रिवेदी
एन.डी.डी.बी.
आनंद (गुजरात)

डॉ. के. एल. भाटिया
प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त)
एन.डी.आर.आई.
करनाल (हरियाणा)

डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार
वरिष्ठ वैज्ञानिक
आई.वी.आर.आई., इज्जतनगर
बरेली (उ.प्र.)

डॉ. एस. बी. गोखले
वाइस प्रेसीडेन्ट बैफ पूणे
(महाराष्ट्र)

आर.के. गुप्ता
असिस्टेन्ट कमिश्नर
डेयरी डवलपमेंट
प्रतिनिधि ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

संकाय सदस्य : कृषि विद्यापीठ

प्रोफेसर पंजाब सिंह, प्रोफेसर
डॉ. एम. के. सलूजा, उपनिदेशक
डॉ. एम. सी. नायर, उपनिदेशक
डॉ. इन्द्राणी लाहिरी, सहायक निदेशक
डॉ. पी. एल. यादव, वरिष्ठ परामर्शदाता
डॉ. डी.एस. खुरदिया, वरिष्ठ परामर्शदाता
जयराज, वरिष्ठ परामर्शदाता
राजेश सिंह, परामर्शदाता

कार्यक्रम निर्माण समिति

इकाई लेखक : डॉ. एस. बी. गोखले, वाइस प्रेसीडेन्ट, बैफ, पुणे (महाराष्ट्र)

भाषा सम्पादक, अनुवाद एवं प्रूफ पठन : राजेश सिंह, परामर्शदाता, कृषि विद्यापीठ, इग्नू

तकनिकी सम्पादक : डॉ. पी.एल. यादव, वरिष्ठ परामर्शदाता, डॉ. राजीव रंजन कुमार, परामर्शदाता, कृषि विद्यापीठ, इग्नू

सम्पादक : डॉ. एम.सी. नायर, उपनिदेशक, कृषि विद्यापीठ, इग्नू

कार्यक्रम अभिकल्प : नरेन्द्र रघुनाथ, षजीवन, मिनि सधाकरन

परियोजना समन्वय समिति

परियोजना निदेशक - प्रोफेसर पंजाब सिंह, प्रोफेसर, कृषि विद्यापीठ, इग्नू

कार्यक्रम समन्वयक - डॉ. एम.सी. नायर, **सह-समन्वयक**, डॉ. एम.के. सलूजा

अप्रैल, 2005

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2005

ISBN- 81-266-1710-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ़ी (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इस कार्यक्रम के सम्बन्ध में अधिक जानकारी कृषि विद्यापीठ, डेक भवन, प्रथम तल, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110 068 से प्राप्त की जा सकती है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुल सचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेजर कम्पोजिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, 5A/177, W.E.A. करोल बाग, नई दिल्ली-110 005
"Paper Used : Agrobased Environment Friendly"
मुद्रक : गीता ऑफसेट प्रिंटर्स, सी–90, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली–110020

कार्यक्रम परिचय

भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ कृषि एवं पशुपालन को माना जाता है। मानसून की कृषि पर निर्भरता के चलते प्राचीन काल से ही पशुपालन प्रासंगिक है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जहाँ एक ओर पशुपालन वैज्ञानिक शोध के बल पर उद्योग का रूप ले चुका है, वही डेयरी की आधुनिक तकनीक का अनुसरण कर ग्रामीणजन आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। देश में पशुपालन कार्य सामान्यतौर पर ग्रामीणों द्वारा किया जाता है, अधिकतर पशुपालक जागरूकता के अभाव में इस क्षेत्र में हो रहे नित नये अनुसंधानों से अनभिज्ञ रहते हैं। पशुधन की संख्या एवं दुग्ध उत्पादन (86.7 मिलियन टन, "इण्डिया 2005") की दृष्टि से भारत विश्व परिदृश्य में प्रथम स्थान पर है. लेकिन प्रति पशु उत्पादकता का कम होना अत्यन्त विचारणीय पहलू है। यदि पशुपालको को पशुपालन सम्बन्धी वैज्ञानिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक पहलुओं के प्रति जागरूक किया जाय तो यह युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक साबित हो सकता है। वैज्ञानिक क्रान्ति के मुख्यतः तीन आयाम, शिक्षा अनुसंधान एवं प्रसार है। उन्नत पशुपालन के प्रति आम व्यक्ति में जागरूकता का संचार करने हेतु इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संचालित कृषि विद्यापीठ (स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर) द्वारा ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत शासन के सहयोग से डेयरी फार्मिंग जागरूकता कार्यक्रम तैयार किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत डेयरी फार्मिंग परिचय, पशु प्रजनन, जनन, पशुपोषण आहार एवं चारा प्रबन्धन, गाभिन पशु एवं बछड़ा–बछिया की देखभाल, दुग्ध उत्पादन, पशु आवास, स्वास्थ्य प्रबन्धन, पशु रोग रोकथाम एवं नियंत्रण, डेयरी फार्म के उपकरण, डेयरी फार्म अर्थशास्त्र एवं लेखांकन, दुग्ध परीक्षण रखरखाव तथा भण्डारण, डेयरी फार्म के अपशिष्ट का निस्तारण, डेयरी विकास में विभिन्न अभिकरणों की भूमिका जैसी चौदह इकाईयों का प्रकाशन किया गया है। इसके अलावा डेयरी फार्मिंग से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर आधारित श्रव्य–दृष्य (आडियो–वीडियो) चलचित्र (फिल्मों) का निर्माण किया गया है।

क्षेत्र परीक्षण (Field Testing) : डेयरी फार्मिंग जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली 14 (चौदह) इकाईयों का क्षेत्र परीक्षण दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के पाँच गांवों में 20-25 पशुपालक समूह के बीच किया गया। पशुपालकों एवं किसानों के सुझाव के आधार पर इन इकाइयों में संशोधन किया गया। कृषि विद्यापीठ इग्नू के संकाय सदस्यों के अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, कैटेट के प्रभारी डॉ. करतार सिंह एवं डॉ. आर.एस. छिल्लर एवं डॉ. बी.के. सिंह ने इस कार्य में विशेष रूप से सहयोग प्रदान किया। यह डेयरी फार्मिंग जागरूकता कार्यक्रम पशुपालकों हेतु मागदर्शक एवं पशुपालन व्यवसाय के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

विषय-सूची

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	प्रस्तावना	5
2	उद्देश्य	5
3	गाभिन पशु व बछड़ा–बछिया की देखभाल	6
	3.1 गाभिन पशु का प्रसव के पूर्व तथा पश्चात् प्रबन्धन	6
	3.1.1 गर्भधारण का समय	6
	3.1.2 प्रांरभिक महीनों मे गाभिन पशु की देखभाल	7
	3.1.3 गाभिन पशु का आहार	7
	3.1.4 अंतिम महीनों में गाभिन पशु की देखभाल	8
	3.1.5 ब्याते समय पशु की देखभाल	10
	3.1.6 गर्भावस्था पूरा होने के लक्षण	10
	3.1.7 पशु द्वारा बच्चा देने की अवस्था में ध्यान देने योग्य बातें	11
	3.1.8 ब्याते समय आने वाली कठिनाई तथा उनका निवारण	13
	3.1.9 जेर गिराना	14
	3.1.10 गर्भाशय का बाहर आना	15
	3.1.11 दुधारू पशु का आहार	15
	3.1.12 प्रसव के बाद पशु का रखरखाव	16
	3.2 नवजात बछड़ा–बछिया का पालन	17
	3.2.1 नवजात बछड़ा–बछिया को दूध पिलाने की विधि	17
	3.2.2 जन्म के समय बछड़ा–बछिया की देखभाल	18
	3.2.3 खीस पिलाना	19
	3.2.4 दूध पिलाना	20
	3.2.5 दूध छुड़ाना	20
	3.3 बछड़ा–बछिया का आहार	21
	3.3.1 छोटे बछड़ा–बछिया का आहार	22
	3.3.2 नवजात बछड़ा–बछिया का आहार	23
	3.4 आवास व्यवस्था व देखभाल	25
	3.4.1 आवास व्यवस्था	25
	3.4.2 देखभाल व पहचान के लिए नम्बर लगाना	25
	3.5 सींग रोधन	27
	3.5.1 रासायनिक विधि	27
	3.5.2 लोहे के उपकरण अथवा विद्युत मशीन द्वारा	27
	3.6 टीकाकरण	28
	3.7 पेट के कीड़ों को मारना	29
	3.8 बढ़ते बछड़ा–बछिया का वृद्धि एवं विकास	29
4	सारांश	31
5	प्रयोगात्मक कार्य	31
6	प्रश्न–उत्तर	32
7	कार्य निर्धारण	33
8	क्या करे क्या ना करे	33
9	शब्दावली	34

1. प्रस्तावना (Introduction)

दुधारू पशु के लिये उसका गाभिन होना और बच्चा देना जरूरी है। यदि दुधारू मादा दोबारा गाभिन नहीं होगी तो कुछ समय के बाद सूखी हो जाएगी अर्थात् वह तब तक सूखी समझी जायेगी जब तक वह बच्चा न दें।

चित्र 1 : गाय तथा नवजात

प्रायः यह देखा जाता है कि पशुपालक दुधारु पशु पर जितना ध्यान देते हैं उतना ध्यान गाभिन पशु पर नहीं देते हैं। जबकि गाभिन पशु पर ध्यान देना बहुत जरूरी होता है, क्योंकि अच्छी देखरेख के बाद पशु और ब्याने के बाद उससे मिलने वाले दूध उत्पादन एवं बछड़ा–बछिया के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। पशुं का समयानुसार गाभिन होकर बच्चे को जन्म देना व निश्चित अवधि के बाद इसी प्रक्रिया से गुजरना अच्छी प्रजनन क्षमता को दर्शाता है। प्रायः बछिया को दो या ढ़ाई वर्ष की औसतन उम्र में गाभिन हो जाना चाहिये। लेकिन ऐसा देखा गया है कि पशु इस माप दण्ड पर खरे नहीं उतरते हैं, कुछ बछिया गाभिन होने में ज्यादा समय लेती है इसलिये पशु पालक को इस दिशा में उचित ध्यान देना चाहिये। वास्तव में पशु ब्याने के बाद 4 माह के अन्दर पुनः गाभिन हो जाना चाहिए।

2. उद्देश्य (Objectives)

गाभिन पशु के साथ–साथ ब्याने के पश्चात् देखभाल, नवजात बछड़े व बछिया, को खीस पिलाना, बछड़े को गाय के थन से दूध छुड़ाना तथा दूध छोड़ने के बाद उसकी देखभाल, बछड़े–बछिया को प्रारम्भिक आहार (काफस्टार्टर) के बारे में बताना, बछड़े बछिया के पेट के कीड़ों को मारना तथा संक्रामक रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण करना, बछड़े–बछिया के वृद्धि एवं विकास के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना, सींग रोधन की उपयोगिता के सम्बन्ध में प्रकाश डालना इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है।

3. गाभिन पशु व नवजात की देखभाल (Case of New Boarn and Pregnent Animal)

3.1 गाभिन पशु का प्रसव (ब्याने) के पूर्व तथा पश्चात् प्रबन्धन

गाभिन पशु की पहचान

1. मादा पशु का गर्म होना बंद कर देना।
2. पेट बड़ा दिखाई देना।
3. दूध में थोड़ी कमी हो जाना।

3.1.1 गर्भधारण का समय

पशु को गाभिन कराने की तिथियों के अभिलेख रखना चाहिये। इससे उनके प्रसवकाल की तिथियों का सही अनुमान लग सकता है। पशुपालक को पशुचिकित्सक से संपर्क कर पशु के ब्याने की तिथि निर्धारित करनी चाहिए।

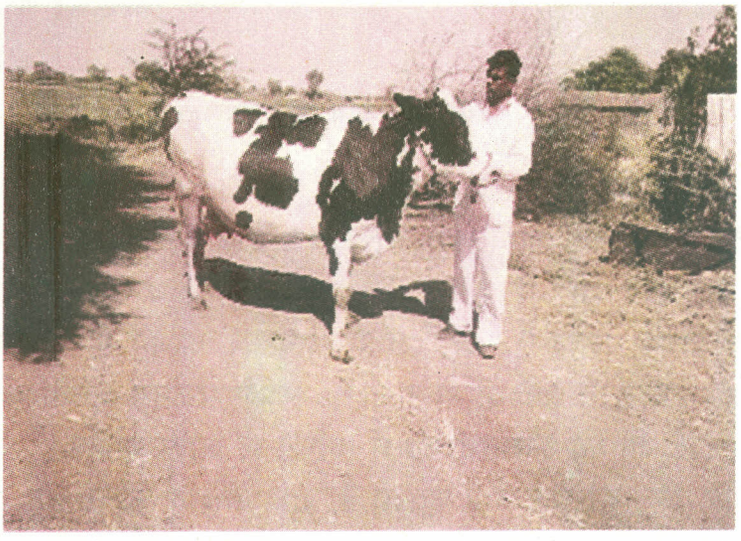

चित्र 2 : चिकित्सक से गर्भधारण की जाँच कराने हेतु ले जाता पशुपालक

प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान के बाद यदि पशु पुनः 21 दिन उपरान्त गर्मी में नहीं आता है तो 50 से 75 दिन पशु चिकित्सक को दिखाकर उसके गर्भधारण की जाँच करानी चाहिए।

सारणी 1 : गर्भावस्था की अवधि

पशु	औसत दिन
गाय	282-285
भैंस	310-312
बकरी	150-151

3.1.2 प्रारम्भिक महीनों में गाभिन पशु की देखभाल

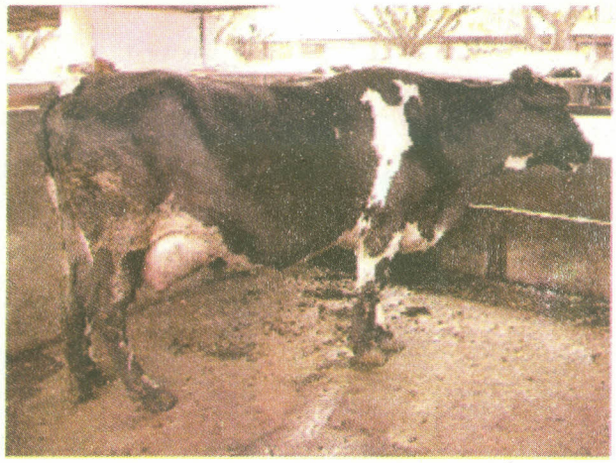

चित्र 3 : गाभिन पशु के साथ सरल व्यवहार करना चाहिये।

- गाभिन पशु के साथ सरल व्यवहार करना चाहिये ।
- गाभिन पशु को कभी डराना - धमकाना या दौड़ाना नहीं चाहिये ।
- गाभिन पशु को ऐसे पशुओं से दूर रखे जिनको गर्भपात हुआ है या अन्य कोई संक्रामक बिमारी हो।

3.1.3 गाभिन पशु का आहार

- गाभिन पशु को 30–40 ग्राम खनिज मिश्रण अवश्य दे ।
- गाभिन गाय भैंस के ब्याने के 3 माह पूर्व से ही 1.5 किलो ग्राम दाना अवश्य देना चाहिये ।
- प्रसव पूर्व कब्ज वाले एवं सूखे चारें का प्रयोग कम करके गेहूँ के चोकर का प्रयोग ज्यादा करे।
- प्रसव उपरान्त चारा दाना बदलना हो तो धीरे – धीरे बदले।
- कैल्शियम, फास्फोरस तथा विटामिन पशु को प्रतिदिन देना चाहिये।
- ब्याने के एक सप्ताह पूर्व गाभिन गाय, भैंस को उच्च कोटि के शीघ्र पाचक चारे जैसे चोकर अलसी की खली देकर दाने की मात्रा बढ़ानी चाहिये।

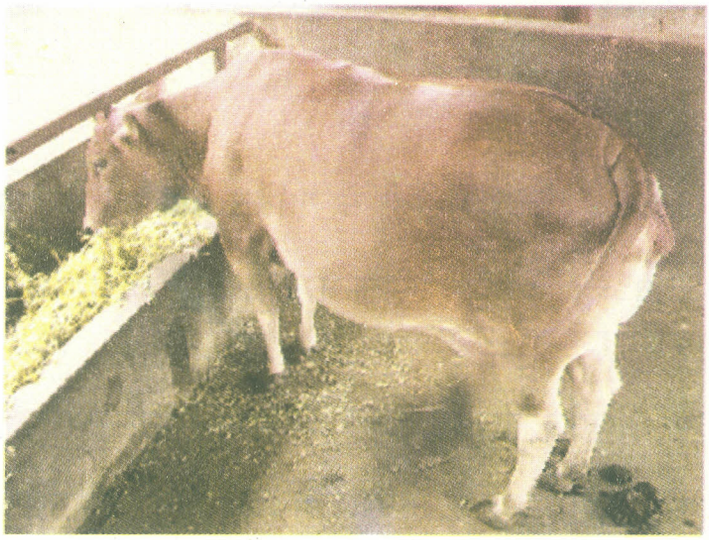

चित्र 4 : गाभिन गाय का आहार

- चार से सात महीने की गर्भावस्था के बाद आहार सप्ताह में 230 ग्राम (लगभग एक पाव) बढ़ाना चाहिए।

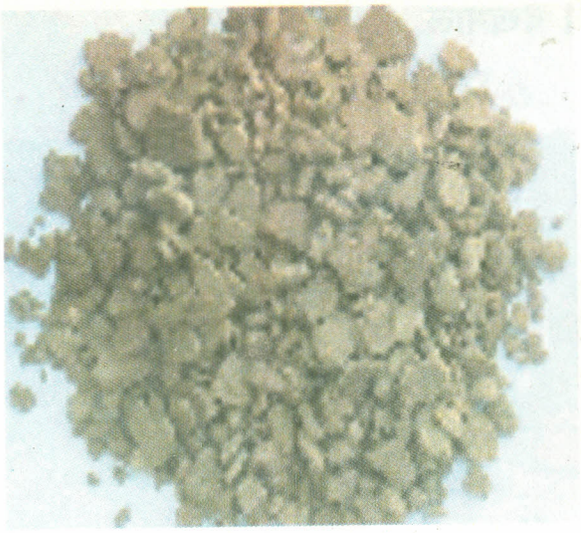

चित्र 5 : 2 कि.ग्रा. पशुआहार प्रतिदिन

चित्र 6 : हरा चारा 25 कि.ग्रा.

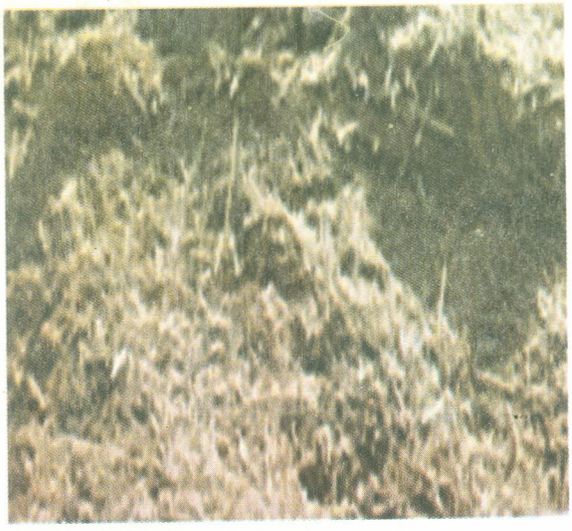

चित्र 7 : सूखा चारा 2 से 3 कि.ग्रा.

चित्र 8 : खजिन मिश्रण 30 से 40 कि.ग्रा.

3.1.4 अंतिम महीनों में गाभिन पशु की देखभाल

प्रसव के अंतिम तीन महीनों में गाभिन पशु की देखभाल करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- गाभिन पशु को बांधने का स्थान साफ सुथरा होना चाहिये ।
- दूधारु पशुओं में प्रसव के तीन माह पहले धीरे – धीरे दूध निकालना बंद करना चाहिये।
- अंतिम महीनों में सुगमता से पचने वाला पौष्टिक आहार दें ।
- प्रसव के समय एवं बाद उपयोग में आने वाली सामग्री का पहले से प्रबंध करें ।

चित्र 9 : प्रसव के अन्तिम महीनो मे गाभिन गाय को अन्य पशुओं से दूर रखे ।

चित्र 10 : प्रसव पूर्व पशुशाला साफ कर स्वच्छ बिछावन की व्यवस्था करें।

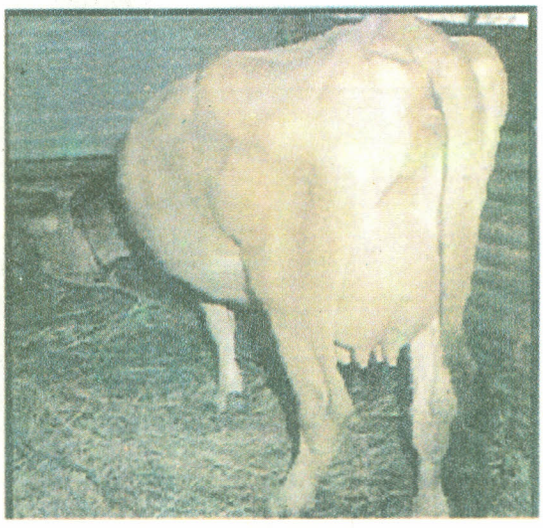

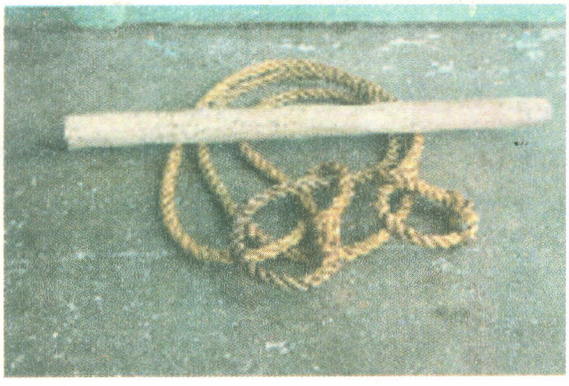

चित्र 11 : प्रसव के समय उपयोग होने वाली वस्तुएं

चित्र 12 : पानी के लिए बकेट

चित्र 13 : रुई, कैंची, टिन्चर, आयोडीन फिनाईल धागा

3.1.5 ब्याते समय पशु की देखभाल

इस बात का विशेष ध्यान दे कि पशु जब बच्चा देने की अवस्था में हो तो उसे एकांत स्थान पर रखना चाहिए। वातावरण पूरी तरह शांत हो तथा ब्याते समय किसी प्रकार की बाह्य सहायता तब तक प्रदान न करे जब तक कि यह सुनिश्चित न हो जाए कि बच्चा निकलने में कोई कठिनाई आ रही है या पशु को मदद की आवश्यकता है। यदि बच्चा देने में कोई कठिनाई महसूस हो तो केवल जानकार व्यक्ति ही सहयोग करे अथवा शीघ्र निकट के पशु चिकित्सक की सहायता ले ताकि मादा व बच्चा स्वस्थ्य रहे तथा अगले ब्यात के लिए बच्चेदानी में कोई संक्रमण न हो।

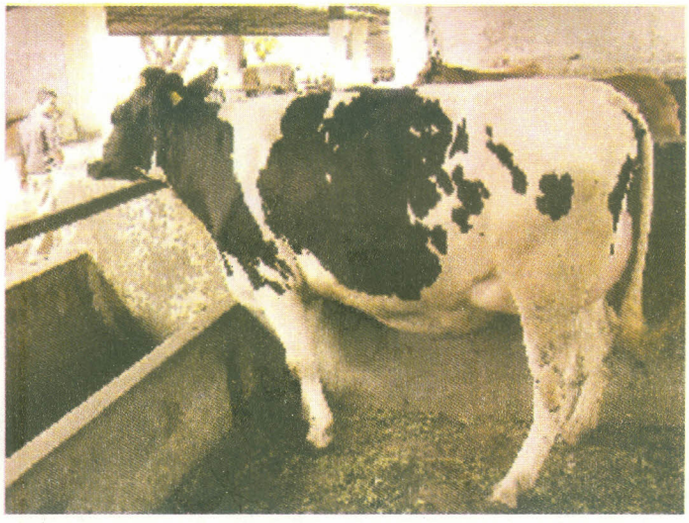

चित्र 14 : ब्याते समय पशु विचलित होता है

प्रायः देखा गया है कि पशुपालक अज्ञानी व्यक्ति का इस कार्य में सहयोग लेते हैं जो अपनी अनभिज्ञता के कारण बच्चे की खींचतान करते हैं और मादा के प्रजनन अंगों को हानि पहुंचाते हैं।

3.1.6 गर्भावस्था पूरा होने के लक्षण

1. पशु का अयन बढ़ने लगता है। अयन में दूध आ जाता है।
2. योनि मार्ग में सूजन आती है।
3. जनन अंगों से सफेद गाढ़ा स्राव निकलता है।
4. पूंछ की जड़ के पास की बनावट ढ़ीली पड़ जाती है।
5. पूंछ को ऊपर उठाती है।
6. चारा खाना कम कर देती है।
7. थोड़ी बैचेन महसूस करती है।
8. अकेली रहना पसंद करती है।

चित्र 15 : ब्याने की प्रारम्भिक स्थिति

3.1.7 पशु के ब्याने की दशा में ध्यान देने योग्य बातें :

1. पशु को एकांत में रखे, उससे किसी प्रकार की छेड़छाड़ न करे।
2. सबसे पहले योनि मार्ग से पानी का गुब्बारा निकलता है जो अपने आप फूट जाता है उसे फोड़ने का प्रयास न करे।
3. इसके बाद सामान्य दशा में बछड़े के अगले दो पैर आते हैं, और उसके साथ ही सिर निकलता है।
4. सामान्यतः 2 घंटे के भीतर पूरा बच्चा बाहर आ जाता है।

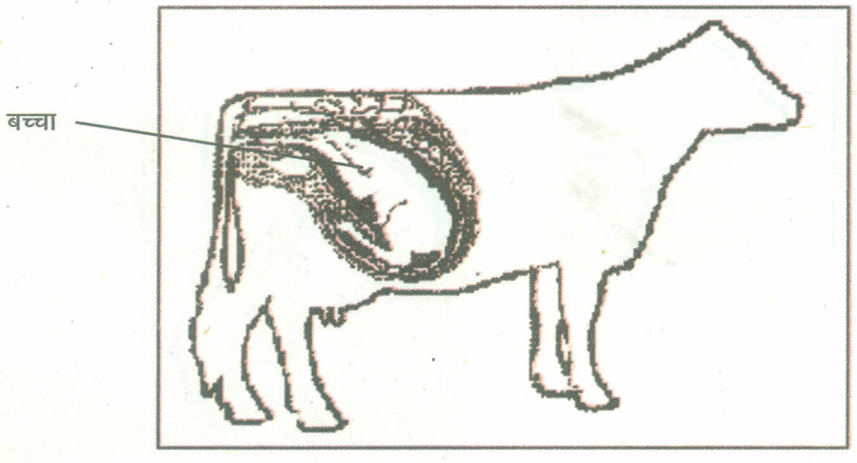

चित्र 16 : सामान्य अवस्था में गाय के गर्भाशय में बच्चे की स्थिति

क - ब्याते समय मादा की प्रारम्भिक स्थिति

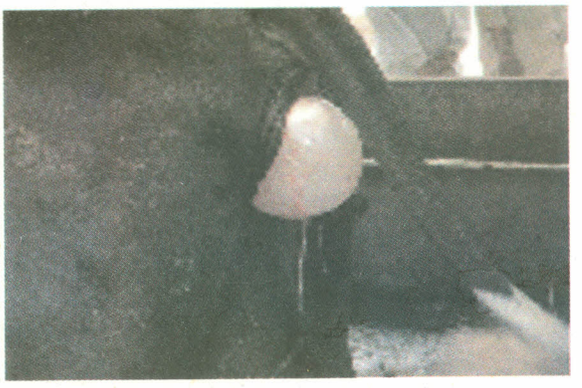

ख - ब्याते समय पानी का गुब्बारा बाहर आता है

ग - बच्चे के अगले दोनों पैर बाहर निकलते हैं

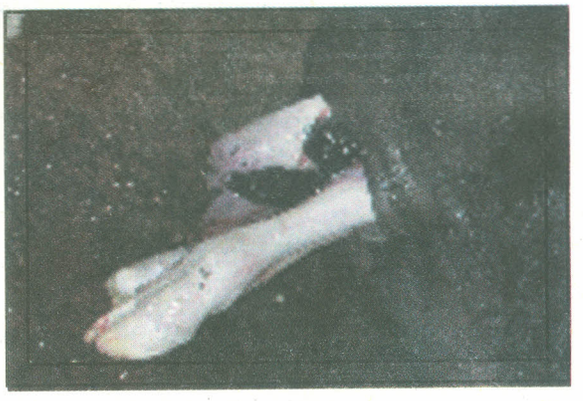

घ - दोनों पैरों के साथ अग्र भाग बाहर निकलता है

च - प्रसव की स्थिति में मादा पशु

छ - बच्चा

चित्र 17 : सामान्य अवस्था में बच्चा गर्भ से बाहर निकलने की स्थिति

3.1.8 ब्याते समय उत्पन्न होने वाली समस्याएँ तथा उनका निवारण

1. मादा पशु बहुत प्रयत्न कर रही है लेकिन पानी का गुब्बारा बाहर नहीं आ रहा है।
2. पानी गुब्बारा फूटने के 2 से 3 घंटे पश्चात् यदि बच्चे का कोई भी अंग बाहर नहीं आता है।
3. बच्चे के दो पैर बाहर आये हैं लेकिन आधा घंटा हो गया है, बच्चा बाहर नहीं आ रहा है।
4. बच्चे का सिर और एक पैर दिखाई दे रहा है।
5. सिर और दो पैर बाहर आये हैं लेकिन मादा पशु अपना पूरा जोर लगाकर भी बच्चा नहीं निकाल पा रही है तब हमें पशु की मदद करनी चाहिये। दोनों पैरों को बांधकर अयन की तरफ एक साथ जोर लगाकर खींचना चाहिये। ज्यादा जोर नहीं लगाना चाहिए नहीं तो मादा पशु को हानि पहुंचने की संभावना होती है।
6. ऊपर दी गई परिस्थितियों में बच्चे जुड़वा या फिर पेट में बच्चा ज्यादा वजन का होने की संभावना होती है।
7. ऐसी परिस्थितियों में पशु चिकित्सक से सहयोग लेना उचित होता है।

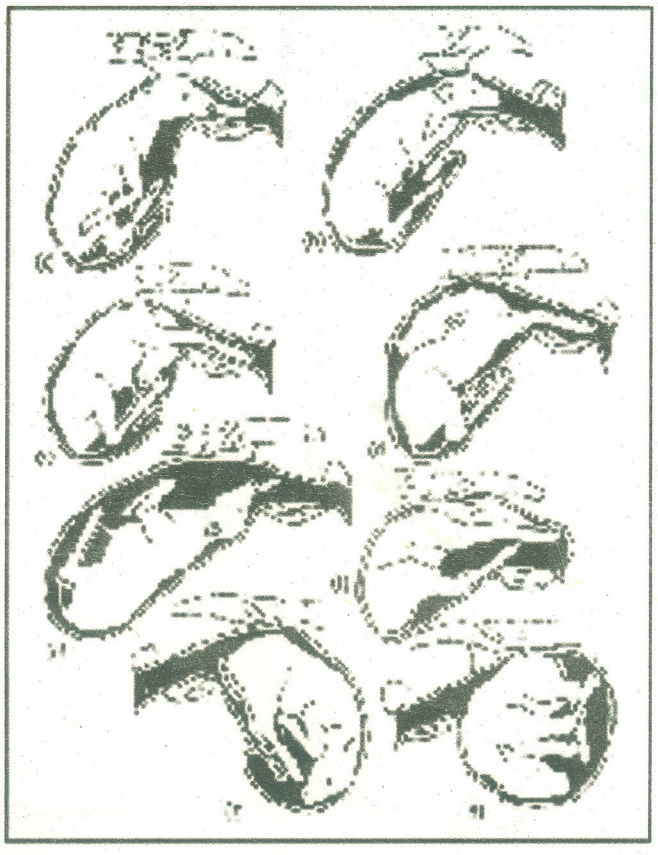

चित्र 18 : प्रसव (ब्याने) की विपरीत परिस्थितियों में बच्चे की अवस्था

मादा पशु के शरीर की सफाई करना बहुत आवश्यक होता है पशु द्वारा बच्चा पैदा करने के बाद उसके योनि मार्ग से लार एवं पानी जैसा लसलसा पदार्थ निकलता रहता है जो उसके पिछले भाग में चिपका रहता है गाय के पिछले भाग को हल्के गर्म पानी से साफ करते रहना चाहिये । इससे पशु साफ सुथरा दिखाई देता है और कोई संक्रामक बीमारी होने का खतरा नहीं रहता है। गर्म पानी से गाय के पिछले हिस्से को धोने से उसके गर्भाशय को पूर्वावस्था में आने में मदद होती है।

3.1.9 जेर गिराना

गर्भावस्था के दौरान बच्चा अपनी माँ से जिस माध्यम से पोषण पाता है उसे प्लैसेटा या गर्भ झिल्ली कहते हैं। बच्चा अपने गर्भकाल में इन्हीं झिल्लियों द्वार अपने माँ के गर्भाशय से जुड़ा रहता है। प्रसव के बाद कुछ ही घंटों में यह झिल्ली गर्भाशय की दीवारों से अलग होकर बाहर आ जाती है तब इसे जेर कहते हैं। बच्चा देने के 6–8 घंटे के अन्दर जेर गिराना चाहिये। यदि जेर गिरने में इससे ज्यादा समय लगता है तो पशु चिकित्सक से सलाह लेनी चाहिये। यदि इसका भली भांति उपचार नहीं हुआ तो शीघ्र ही इसमें सड़न होकर गर्भाशय शोथ (metritis) गर्भाशय पुयता (pyometra) आदि रोग उत्पन हो जाते हैं तथा पशु की प्रजनन क्षमता अथवा मृत्यु होने की संभावना होती है अथवा वह भविष्य में गर्भधारण के योग्य नहीं रहता है। बच्चा जन्म लेने के बाद बाहर लटकी झिल्लियों को कभी भी खींच कर नहीं निकालना चाहिए अन्यथा अगले ब्यात में पशु अनुपयोगी हो जाता है।

रूकी हुई जेर में निम्न लक्षण दिखाई देते हैं।

- पशु का बैचेन होना।
- जेर में बदबू आना।
- खाना, पीना, जुगाली बंद करना।
- जेर का बाहर लटकना।
- पूंछ पर चिपकना।
- जेर निकालने हेतु जोर लगाना।

रूकी हुयी जेर के निवारण हेतु निम्न उपचार करना चाहिए।

- हाथ से जेर निकालना (पशु चिकित्सक द्वारा)।
- फ्युरिया बोलस गर्भाशय में रखना।
- जेर निकालने के बाद स्थान की साफ सफाई करना।

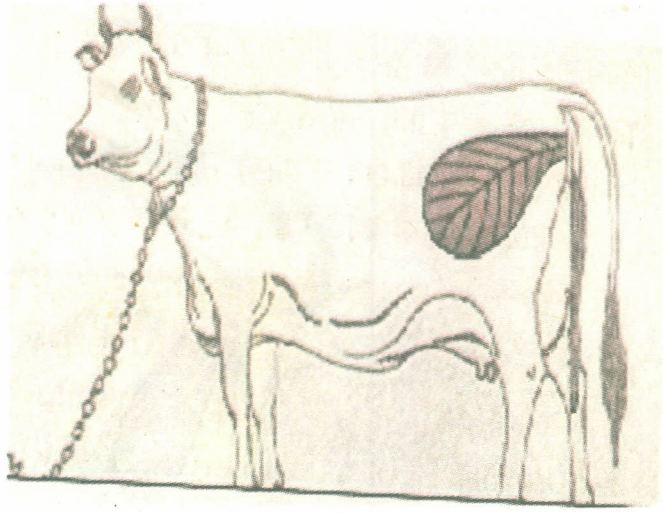

चित्र 19 : निकला हुआ जेर ऐसा दिखाई देता है।

3.1.10 गर्भाशय का बाहर आना

पशु के ब्याने के बाद कभी–कभी गर्भाशय बाहर की ओर उलटकर योनि मुख पर लटकने की संभावना होती है, इसके निम्न लक्षण दिखाई देते हैं।

- गर्भाशय का भाग योनी मार्ग से बाहर लटकना।
- खाना पीना कम कर देना।
- पशु का जोर लगाना।

उपचार

- बाहर निकले हुए गर्भाशय को धोकर साफ कर बंधी हुई मुठियों की सहायता तथा तेल का उपयोग कर अन्दर करना चाहिए।
- पशु को हल्का शीघ्रपाचक और पौष्टिक आहार देना चाहिए।

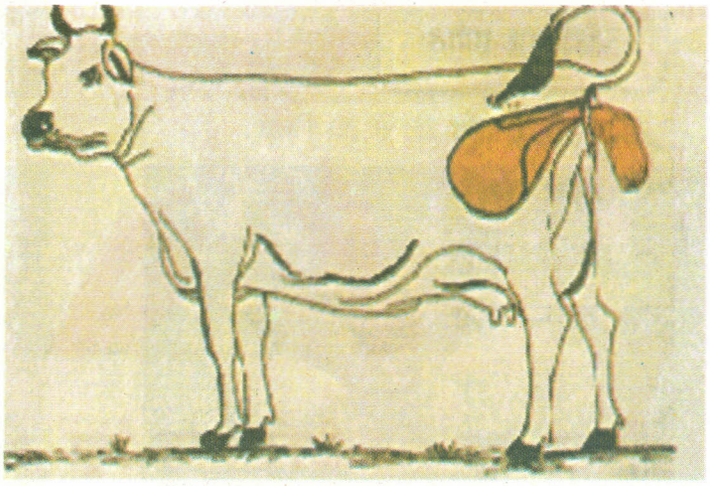

चित्र 20 : गर्भाशय का बाहर आना

सावधानी

कोई भी व्यक्ति बिना सोचे समझे व गन्दे हाथों से बच्चेदानी के बाहर निकले हुये भाग को अंदर डालने की कोशिश न करे अन्यथा बच्चादानी फट सकती है या उसके अन्दर संक्रमण (Infection) हो सकता है।

3.1.11 दुधारू पशु का आहार

ब्याने के बाद मादा के शरीर में पोषक तत्वों की आवश्यकता बढ़ जाती है तथा उसके शरीर के आन्तरिक भागों में बदलाव होता है इसलिये मादा के बच्चा देने के बाद उसके आहार में पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होना चाहिये।

ब्याने के तुरन्त बाद पशु को कार्बोहाइड्रेट युक्त चारा देना चाहिये । तेलीय खलिया (oil cakes) दूध के बहाव को अधिक उत्तेजित करती है इनका प्रयोग 3–4 दिन तक वर्जित रहना चाहिए। दाने की मात्रा धीरे–धीरे बढ़ानी चाहिये जिससे एक या दो सप्ताह में मादा अपनी आवश्यकतानुसार अधिक से अधिक दाना खा सके। चारा और दाना सुगमता से पचने वाला होना चाहिये। संतुलित आहार के रूप में 40–50 ग्राम खनिज तत्व प्रतिदिन खिलाना चाहिये । गाय के बच्चा देने के बाद उसके चारे और दाने की मात्रा धीरे–धीरे बदलना चाहिये ।

400 किलो ग्रॅाम वजन तथा प्रतिदिन 12 लीटर दूध देने वाली गाय को निम्नलिखित खुराक देनी चाहिये।

हरा चारा 25 से 30 कि.ग्रा.

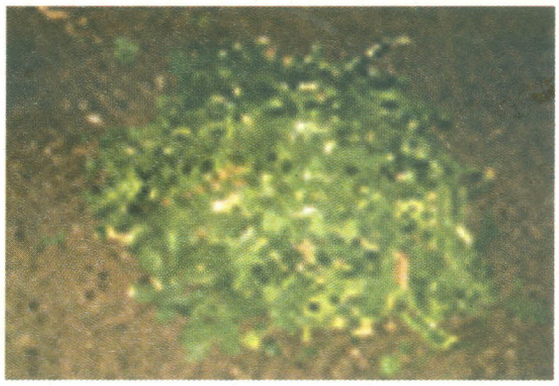

सुखे घास की कुट्टी या सुखा चारा 3 से 5 कि.ग्रा.

5 कि.ग्रा. पशुआहार प्रतिदिन

खनिज मिश्रण 30 से 40 ग्राम

चित्र 21 : पशु आहार - शरीर निर्वाह के लिये 2 कि.ग्रा. और प्रति लीटर दूध पर 400 ग्राम पशु आहार देना चाहिये।

3.1.12 प्रसव के बाद पशु का रखरखाव

प्रसव के एक घंटे के भीतर नवजात बछड़ा–बछिया का खड़ा होना जरूरी होता है। गर्म पानी से पशु के पिछले हिस्से को धोना चाहिये। उर्जा युक्त सुपाच्य आहार देना चाहिये जैसे कार्बोहाइड्रेट युक्त चारा आदि।

चित्र 21: ब्याने के बाद पशु को साफ सुथरे स्थान पर रखे तथा नवजात को चाटने दे।

प्रसव के उपरान्त पशु के रखरखाव में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. संक्रामक रोग से ग्रसित पशुओं से दूर रखना चाहिये। कुछ संक्रामक जीवाणु जैसे स्ट्रेप्टोकोकाई (*Streptococci*), स्टेफिलोकोकाई (*Staphylococci*), माईकोबैक्टेरियम ट्यूबरकुलोसिस (*Mycobacterium tuberculosis*) द्वारा बच्चा देने वाले पशुओं में संक्रामक बीमारी हो सकती है ।
2. चारा धीरे–धीरे बदलना चाहिये । अधिक कार्बोहाइड्रेट वाला चारा देने के बाद जब पशु को एका एक उच्च किस्म की प्रोटीन वाला आहार खिलाया जाता है तो उसमें कीटोटीस होने की संभावना बढ़ जाती है ।
3. विटामिन और कैल्शियम उचित मात्रा में उपलब्ध होना चाहिये। खीस द्वारा शरीर से अधिक कैल्शियम बाहर निकलता है जिससे रक्त में इस तत्व की कमी हो जाती है और पशु दुग्ध ज्वर रोग से प्रभावित होता है।
4. बच्चा देने के बाद सामान्यतः पशु का गर्भाशय 21–50 दिन में सामान्य अवस्था में आता है। ब्यात के लगभग 60–70 दिनों के अन्दर गाय दुबारा प्रजनन हेतु गर्मी में आती है। यह उचित समय होता है, इस समय दुधारू पशु को पुनः गाभिन करवा देना चाहिये ताकि वैज्ञानिक ढंग से हर वर्ष गाय एक बच्चा दे एवं सूखा समय केवल दो ही महीने का रहे। इससे पशुपालक दुधारू पशु से अधिक से अधिक दूध उत्पादन प्राप्त करते हैं और सूखा पशु केवल ब्यात से 2 महीने ही पालना पड़ता है।

3.2 नवजात बछड़ा-बछिया का पालन

मादा पशु का बछड़ा साँड, भैंसा, बकरा अथवा बैल तथा बछिया गाय, भैंस या बकरी होती है, इसलिये बचपन से ही उनके आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिये। बछड़ा–बछिया की सही देखरेख उसके जन्म से पूर्व ही आरंभ हो जाती है। यदि गाभिन पशु तथा गर्भस्त बछड़े को आवश्यकतानुसार सही आहार नहीं मिलता है तो कई समस्यायें उत्पन्न हो जाती है, इसलिये गाभिन पशु को उनकी शारीरिक आवश्यकता के अनुसार चारा देना चाहिए इससे बछड़े स्वस्थ्य पैदा होते हैं।

3.2.1 बछड़ा-बछिया को दूध पिलाने की विधि

चित्र 23 : बोतल से दूध पिलाना

(1) अलग से दूध पिलाना

अलग से दूध पिलाने से लाभ :

- जितना दूध चाहिये उतना ही पिला सकते हैं।
- किसी भी पशु का दूध पिला सकते हैं ।
- नवजात को अलग रखा जा सकता है।
- बिमारियों से बचाव होता है।

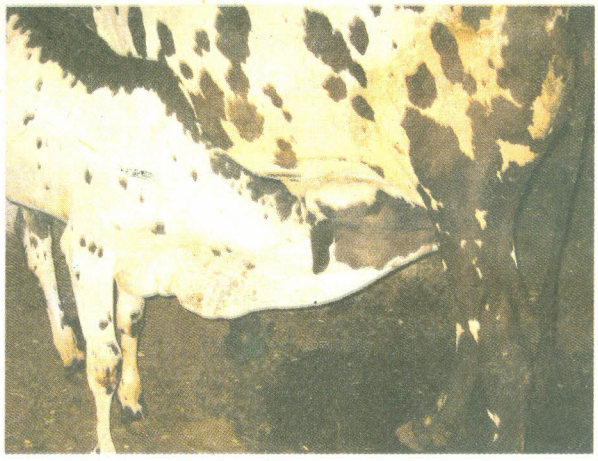

चित्र 24 : माँ के थन से दूध पिलाना

(2) थन से दूध पिलाना

थन से दूध पिलाने से होने वाली हानिः

- पशु की दूध देने की क्षमता समझ में नहीं आती है तथा दूध का माप ठीक प्रकार से नहीं किया जा सकता है।
- बछड़ा–बछिया मर जाए तो पशु दूध देना बंद कर देती है।
- बछड़ा–बछिया को ज्यादा या कम दूध मिल रहा है इसका पता नहीं चल पाता ।
- ज्यादा दूध पीने से दस्त की बीमारी हो सकती है और कम दूध पीने से बछड़े का विकास अच्छा नहीं होता है।
- यदि पशु को कोई बिमारी है तो वह तुरंत बछड़ा–बछिया को हो जाती है।

3.2.2 जन्म के समय बछड़ा-बछिया की देखभाल

जन्म के पश्चात् बछड़े के नथूने तथा मुँह पर लगा हुआ श्लेष्मा अच्छी प्रकार साफ कर देना चाहिए।

चित्र 25 : यदि बछड़ा-बछिया का नाभी नाल 1" इंच से बड़ा हो तो इसे ब्लेड या जीवाणु रहित कैची से काटे, नाल पर टिंचर आयोडीन लगाये।

चित्र 26 : यदि बछड़ा-बछिया को साँस लेने में कठिनाईयाँ आ रही है तो उसे लेटाकर उसकी छाती पर दबाव देकर साँस लेने में सहयोग करें।

चित्र 27 : बछड़ा-बछिया को जन्म के समय अगर कठिनाईयाँ आई है तो उस तुरंत उलटा पकड़कर रखे।

चित्र 28 :जन्म के पश्चात् उसे अलग बांध कर या पिंजरे में रखना चाहिये।

3.2.3 खीस पिलाना

चित्र 29 : नवजात बछड़ा-बछिया हेतु खीस में आवश्यक तत्व होते हैं इसलिए खीस पिलाना जरूरी है।

- पहले 4 दिन तक बछड़ा–बछिया को खीस पिलाना आवश्यक है।
- कुछ पशु पालक पशु के जेर गिरने तक खीस पिलाने का इन्तजार करते हैं यह तरीका गलत है।
- खीस से बछड़ा–बछिया को बिमारियों से लड़ने की शक्ति मिलती है।
- रोग प्रतिकारक पदार्थों के अभाव में बछड़ा–बछिया रोगों से मुकाबला नहीं कर सकता है अतः प्रत्येक बछड़े को जन्म के पश्चात् दो घण्टे के भीतर उचित मात्रा में खीस पिलाना चाहिये।
- यदि अलग से दूध पिलाना हो तो पहले उसे उबाले फिर ठण्डा होने पर पिलाएँ।

3.2.4 दूध पिलाना

बछड़ा–बछिया के वजन के अनुपात में 10 प्रतिशत दूध प्रतिदिन पिलाना जरूरी होता है। उसे हरा चारा तथा सूखा चारा और दाना मिश्रण (काफ स्टार्टर) नियमित रूप से देना चाहिये।

चित्र 30 :बछड़ा-बछिया को तसले में दूध चूसना सिखाना चाहिये।

चित्र 31: बड़ा होने के बाद में बछिया-बछड़ा स्वयं ही दूध पी सकते हैं।

3.2.5 दूध छुड़ाना

बछड़ा–बछिया का दूध छुड़ाते समय कोई भी परिवर्तन शीघ्र न करे। धीरे–धीरे दूध कम कर, दाना मिश्रण (काल्फ स्टार्टर) और चारे का प्रयोग करे। निम्नलिखित सारणी अनुसार बछड़ा–बछिया को तीन माह तक ही दूध पिलाकर बाद में दूध बंद कर देना चाहिए । दूध छुड़ाने के बाद दाना मिश्रण और चारे की मात्रा में बढ़ोतरी करनी चाहिये।

जन्म के 45 दिन तक बछड़ा–बछिया के वजन के दसवें हिस्से के बराबर दूध पिलाया जाता है। 45 से 60 दिनों तक वजन के 8 प्रतिशत, 60 से 90 दिनों तक वजन के 5 प्रतिशत, मात्र 3 महीनों तक ही दूध पिलाना चाहिए।

सारणी-2

(बछड़े तथा बछिया के आहार सम्बन्धी सारणी)

उम्र	खीस (कि.ग्रा.)	दूध (कि.ग्रा.)	बछड़े का दाना मिश्रण (ग्रा.)	हरा चारा
1 – 4 दिन	2 – 25	–	–	जितना खा सके
4 – 30 दिन		2.5–3.0	–	–।।–
1 – 1½ महीने		3.5	250	–।।–
1½ – 2 महीने		2.5	350	–।।–
2 – 3 महीने		2.0 – 0.5	500	–।।–
3 – 4 महीने			700	–।।–
4 – 6 महीने			1000	–।।–

(नोट – उपर दी गई सारणी 25 किलो वजन के बछड़े के लिये हैं।)

3.3 बछड़ा - बछिया का आहार

चित्र 32 : असंतुलित आहार से कमजोर बछड़े की स्थिति

- बछड़े–बछिया को उसके वजन का 10 प्रतिशत दूध पिलाना चाहिये।
- दूध दिन में 2–3 बार देना चाहिये।
- 1–4 दिन तक पशु का पहला दूध (खीस) बछड़ा–बछिया को अवश्य पिलाना चाहिए।

3.3.1 छोटे बछड़ा-बछिया का आहार (काफ स्ट्रार्टर) के घटक

- मक्का – 50 प्रतिशत
- मूंगफली की खली – 20 प्रतिशत
- गेहूँ का चोकर – 15 प्रतिशत
- फिश मिल तथा सूखा सपरेटा दूध – 7 प्रतिशत

  (यदि फिश मील उपलब्ध न हो तो मूंगफली की खली की मात्रा बढ़ा दे।)
- शीरा/गुड़ – 5 प्रतिशत
- खनिज मिश्रण – 3 प्रतिशत

बछड़ा-बछिया को 1-3 माह तक,
2.5-3.5 कि.ग्रा. तक दूध पिलाना चाहिए

दाना मिश्रण (काफ स्ट्रार्टर)
1 से 2 माह - 100 से 250 ग्राम
2 से 3 माह - 250 से 500 ग्राम
3 से 6 माह - 500 से 1000 ग्राम

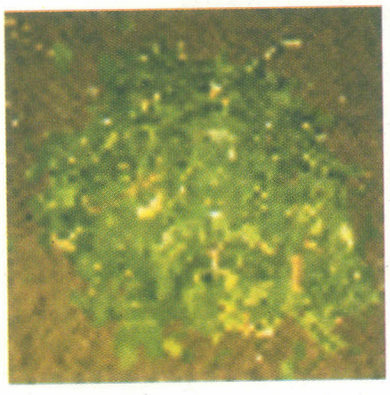

हरा चारा/सूखा चारा

खनिज मिश्रण 10 से 20 ग्राम

चित्र 33 : उपरोक्त खुराक 25 किलो ग्राम वजन के बछड़ा-बछिया के लिये हैं।

3.3.2 नवजात बछड़ा-बछिया का आहार व्यवस्थापन

बछड़ा–बछिया 10 दिन का होते ही उसके सामने पानी और उनके लिए बनाया गया पशु आहार (Calf Starter) रखना शुरू कर देना चाहिये। यह आहार वह जितनी जल्दी खाने लगे उतना ही उनका वजन बढ़ेगा और इससे सुषुप्तावस्था में वाला रहने वाला पेट (Rumen) सक्रियता पूर्वक कार्य करने लगता है। लेकिन वह उस समय खाता नहीं है, खाने की आदत डालने के लिए आहार रखना जरूरी होता है। दाने की मात्रा एक मुठ्ठी से प्रारंभ करके धीरे – धीरे इतनी बढ़ानी चाहिये की 6 माह में वह 1.5 किलो ग्राम पर पहुँच जाए।

चित्र 34 : बछड़ा-बछिया का आहार (काफ स्टार्टर)

इसी प्रकार हरा और थोड़ा सा सूखा चारा/घास मिलाकर बछड़े को 15 दिन की आयु से ही खिलाना आरम्भ करना चाहिये ताकि घास को मुँह में लेकर चबाना शुरू कर दें जिससे उसके पेट (Rumen) का विकास हो सके।

चित्र 35 : बछड़ा-बछिया को सूखा चारा, घास 15 दिन के आयु से ही खिलाना प्रारम्भ कर देना चाहिए।

विटामिन ए और विटमिन डी की आहार में उपलब्धता बहुत ही आवश्यक होती है। विटामिन ए बछड़ों को खीस से उपलब्ध होता है इसलिये नवजात बछड़ा–बछिया को खीस पिलाना अत्यंत आवश्यक है।

चित्र 36 : नवजात बछड़ा-बछिया को खीस पिलाना अत्यंत आवश्यक होता है।

दूध व आहार के साथ बछड़ा–बछिया को थोड़ी मात्रा में खनिज मिश्रण खिलाना चाहिये इससे शरीर में बीमारियों के प्रति सहन शक्ति उत्पन्न होती है और वृद्धि एवं विकास अच्छा होता है।

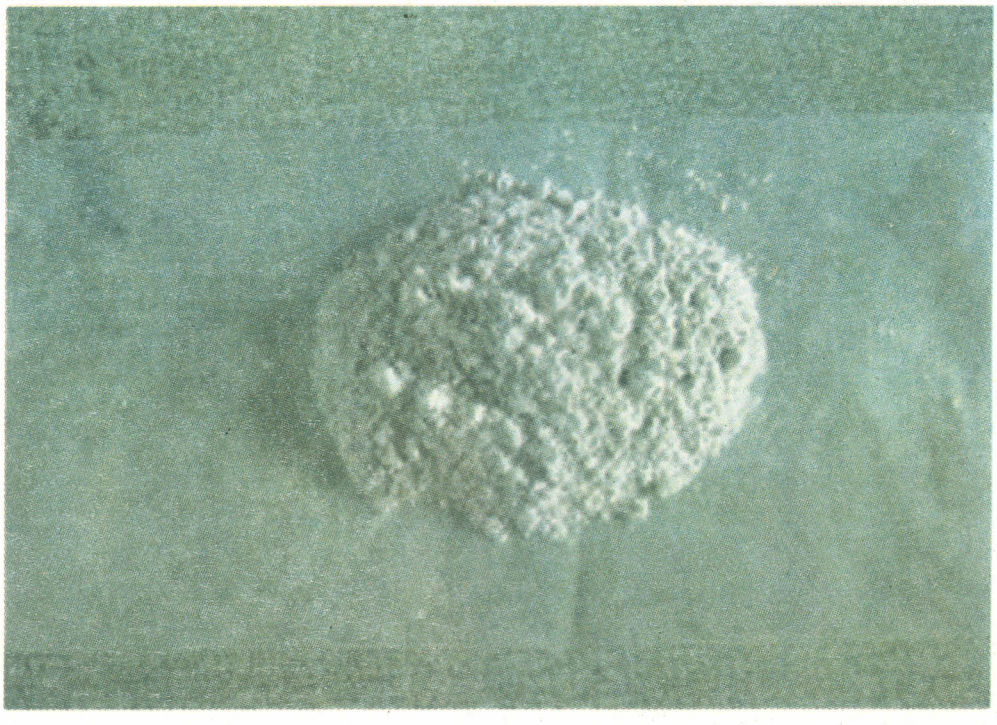

चित्र 37 : खनिज मिश्रण

3.4 आवास व्यवस्था एवं देखभाल

3.4.1 आवास व्यवस्था

आवास व्यवस्था साफ सुथरी हवादार तथा मौसम के अनुरुप होनी चाहिए।

चित्र 38 : बछड़ा-बछिया के लिए खुला स्थान

3.4.2 देखभाल व पहचान

यदि पशुपालक के पास अधिक पशु हो तो पहचान के लिए उनके कान में नंबर डालना जरूरी होता है। यह कार्य जन्म के पहले सप्ताह में करना चाहिए। कान में नंबर होने पर उस बछड़ा–बछिया का सही लेखा-जोखा रखा जा सकता हैं। हर सप्ताह में वजन लेकर उसके अनुसार उन्हें दूध पिलाना जरूरी होता है। जन्म के समय वजन लेकर तीन महीने तक हर सप्ताह का अभिलेख रखना जरूरी है, उसके बाद एक महीने के अंतराल में वजन लेना चाहिये। बछड़ा–बछिया के वजन में 400 से 500 ग्राम प्रतिदिन वृद्धि होनी चाहिये।

चित्र 39 : बछड़े-बछियों को साफ सूथरे सूखे व हवादार स्थान पर बांधना चाहिये।

चित्र 40 : नम्बर डालने की प्रक्रिया

चित्र 41 : दाहिने कान में मशीन से नंबर डाला जाता है। जिससे पहचान करने में आसानी होती हैं।

चित्र 42 : बायें कान पर प्लास्टिक की पट्टी पर नंबर डाला जाता है जिससे बछड़ा-बछिया दूर से आसानीपूर्वक पहचाना जा सकता है। कान में नंबर होने पर सही अभिलेख रखा जा सकता है।

3.5 सींग रोधन

पशु आवास में रहने वाले दुधारु पशुओं को सींग की आवश्यकता महसूस नहीं की जाती है। सींग से दुर्घटना होने का भय बना रहता है। सींग से दूसरे जानवरों को जख्म होने का खतरा रहता है। सींग बढ़ाने से शरीर में अनेक खनिजों की कमी हो जाती हैं। जानवर सींग से हिंसक हो जाते हैं, इसलिए सींग रोधन करना आवश्यक होता हैं। पशु की शिशु अवस्था में ही सींग की वृद्धि को सदैव के लिए रोकने को सीग रोधन करते हैं। पशु में बहुत कम आयु में बटन के आकार की कलिकाएँ होती है जो उम्र साथ बढ़ती है। इन कलिकाओं को जला देने से सींग निकलना बंद हो जाता है। दुधारु पशुओं में सींग होने से कोई लाभ नहीं होता इसलिये इसे समाप्त कर देना ही अच्छा होता है। सींग रोधन का सही समय जन्म के पश्चात् 10 दिन के अंदर ही होना चाहिये।

3.5.1 रासायनिक विधि द्वारा

सोडियम हाइड्रोक्साईड की गोली सीग रोधन के लिए उपयोग की जाती है, लेकिन कभी–कभी सान्द्र छार बहकर आँख में चला जाता है तथा आँख को धुंधला कर देता है।

3.5.2 लोहे अथवा विद्युत मशीन द्वारा

गरम लोहे की सलाखों से मशीन द्वारा सींग को दबाया जाता है। इस विधि का अधिकतर उपयोग किया जाता है, क्योंकि इससे पशुओं को हानि नहीं होती हैं।

1. सबसे पहले सींग कलिका के पास के बाल कैची से पूरी तरह काटकर बछड़े को मजबूती से पकड़कर रखे।

2. गर्म लोहा कलिका पर रखकर सावधानी से कलिका को जला दे।

3. जली हुई सींग कलिका पर हिमेक्स, टेरामायसीन या हल्दी तथा तेल का लेप कर दे। दवा लगाने का कार्य 3-4 दिन तक करना आवश्यक होता है।

3.6 टीकाकरण

टीकाकरण हर पशु के लिये बहुत जरूरी होता है जिससे संक्रामक रोगों का एक जानवर से दूसरे जानवर पर होने वाले रोगों के संक्रमण को रोका जा सकता हैं। टीकाकरण के लिये जीवाणुरहित निडिल का ही प्रयोग कराना चाहिए। टीका गर्दन की त्वचा के नीचे अथवा निर्देशानुसार लगाना चाहिये। बछड़े को स्वस्थ रखने तथा उन्हें रोगों से बचाने के लिए टीके लगाना जरूरी है।

टीकाकरण के मुख्य बिन्दु

- बछड़ा–बछिया डेढ़ महीने का होते ही पहले उसे खुरपका–मुहपका (F.M.D.) रोग प्रतिरोधक टीका लगाना चाहिये। 4 माह का होने पर दोबारा टीका लगाये और बाद में हर 6 माह के बाद टीके लगाये।

चित्र 43 : टीकाकरण की विधि

- बछड़ा–बछिया के 6 माह का होते ही उसे गलघोटू "घटसर्प" (H.S) का टीका लगाना चाहिये और उसके साथ लंगड़ी, बुखार (B.Q) का भी टीका लगाना आवश्यक होता है।

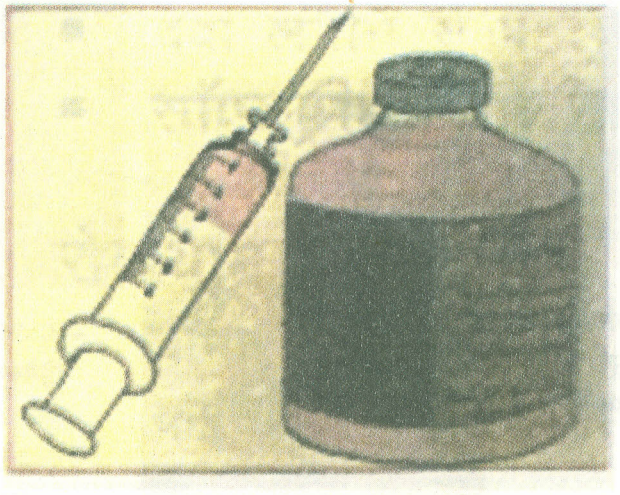

चित्र 44 : टीके की दवा तथा सीरिंज

- बाह्य परजीवी जंतु (जू, मक्खी, पिस्सा, किलनी) के कारण से पशु अस्वस्थ्य रहते हैं और उनमें अनेक संक्रामक रोगों का प्रसार होता है। इसकी रोकथाम के लिये पशु को साफ सुथरा रखना चाहिये। पशु का आवास स्वच्छ रखना चाहिए तथा आवास में सूर्य की रोशनी मिलना आवश्यक होता है। बीमार जानवर छोड़कर सभी जानवरों के शरीर पर कीटानाशक दवाईया ब्युटॉक्स, टॅकटिक आदि का छिड़काव करना चाहिये। वह दवा पेट या आँख में न जाये इसका विशेष ध्यान रखना चाहिये।

चित्र 45 : बाह्य परजीवी हानिकारक जीवाणुओं के लिये दवा का छिड़काव

3.7 पेट के कीड़ों को मारना

बछड़ा–बछिया के पेट के अंदर परजीवी जैसे पट्ट्क मि, गोलकृमि पाये जाते हैं। जिसके कारण से पतली दस्त होना, गोबर में विशिष्ट गंध आना आदि लक्षण दिखाई देते हैं। पिपराजीन या उचित कृमिनाशक औषधि पिलाकर इसे कम किया जा सकता है। बचाव के तौर पर एक माह के बछड़े को यह औषधि पिलाई जा सकती है।

3.8 बछड़ा-बछिया का वृद्धि एवं विकास

हरा चारा 10 कि.ग्राम., हरी घास 5 कि.ग्राम

सूखा चारा 2 कि.ग्राम

पशु आहार 1 कि.ग्राम

खनिज मिश्रण 30 से 40 ग्राम

उपरोक्त खुराक 100 किलो वजन के बछड़े–बछिया के लिये उपयुक्त होता है। जैसे–जैसे वजन बढ़ता जाता है उस अनुपात से आहार में बढ़ोतरी करनी चाहिये।

- यदि बछड़ा–बछिया को ठीक तरह से चारा पानी देकर रखरखाव किया जाय तथा बीमारी से सुरक्षा मिलती रहे तो संकर बछिया 16 से 18 महीने की होकर गर्भावस्था के लिये तैयार हो सकती है।
- जर्सी नस्ल में 15 महीने की उम्र में लगभग बछड़ा–बछिया की छाती का घेरा 55 – 60 इंच होनी चाहिये और वजन 225 – 250 किलो के मध्य होना चाहिये।
- होलेस्टीन नस्ल में यह वजन 300 किलो के आसपास और छाती का घेरा 60 इंच के आसपास होनी चाहिये।

चित्र 46 : बढ़ती बछिया

4. सारांश (Summary)

1. पशु चिकित्सक से पशु के गर्भधारण की जाँच करानी चाहिए। पशु का प्रसव काल के अनुसार ब्याने की तिथि निर्धारित की जा सकती है। गाभिन पशु को गर्भस्थ शिशु की उचित वृद्धि हेतु अंतिम महीनों में अतिरिक्त दाना देना जरूरी होता है। इस समय पशु को अन्य पशुओं से दूर रखते हैं। ब्याते समय बच्चा सामान्य अवस्था में होने पर उससे किसी को छेड़छाड़ नहीं करना चाहिए। बच्चा निकलने में कठिनाईयां आने पर पशु चिकित्सक से सलाह लेना जरूरी है। पशु के ब्याने के बाद धीरे–धीरे आहार में बढ़ोतरी करना जरूरी होता है। नवजात बछड़ा–बछिया को अलग से दूध पिलाकर पाला जा सकता है।नवजात बछड़े–बछिया के जन्म के बाद नथूने तथा मुँह पर लगा श्लेष्मा साफ कर बछड़े को दो घंटे के भीतर खीस पिलाना आवश्यक होता है। बछड़े के वजन के 10 प्रतिशत दूध उसे दिन में तीन बार में दिया जाता है। बछड़े–बछिया को दाना मिश्रण पहले माह से ही शुरू करते हैं और आहार में बढ़ोतरी होने पर दूध पिलाना कम कर देते है।बछड़े का सही अभिलेख रखने के लिये कान में नंबर डालना आवश्यक होता है। सींग रोधन करने पर पशुओं को एक साथ रखने में आसानी होती है। बछड़े–बछिया को डेढ़ माह की आयु में मुँहपका खुरपका और छः माह की आयु में गलाघोटू का टीका लगाना जरूरी होता है। समय सारणी के अनुसार पेट में कीड़े मारने की दवा पिलानी चाहिए। किलनी की रोकथाम के लिये कीटनाशक रसायनों का छिड़काव करना जरूरी होता है।

5. प्रयोगात्मक गतिविधियों (Practical Activities)

क) गाभिन पशु का रखरखाव करना

अ) ब्याने की तिथि निर्धारित करना है।

ब) प्रारम्भिक और अन्तिम महीनों में गाभिन पशु की विशेष देखभाल करना।

स) गाभिन पशु का आहार तैयार करना।

ख) ब्याते समय पशु को देखकर ज्ञात करना ।

अ) सामान्य अवस्था में बच्चा निकलने की प्रक्रिया।

ब) बच्चा जन्म लेने में कठिनाईयां तथा उनका निवारण।

ग) दुधारु पशु का आहार तैयार करना।

घ) जन्म के समय देखभाल करना।

अ) कृत्रिम साँस ब) नाभि नाल की देखभाल स) कान में नंबर डालना

च) नवजात बछड़ा-बछिया को खीस, दूध व आहार देना।

छ) सींग रोधन करना

अ) सींग रोधन का सही समय। ब) सींग रोधन के प्रकार।

ज) टीकाकरण करना

अ) टीकाकरण का सही समय। अ) रोग के अनुसार टीके की आवश्यकता।

6 प्रश्न - उत्तर (Self Assessment Questions & Answers)

प्रश्न गाभिन पशु कैसे पहचाना जाता है?

उत्तर मादा गरम होना बंद कर देती है, पेट बड़ा दिखाई देने लगता है, दूध में थोड़ी कमी हो जाती है।

प्रश्न गाभिन पशु के आहार में क्या शामिल होना चाहिए?

उत्तर प्रतिदिन 30–40 ग्राम खनिज मिश्रण दें, ब्याने के एक सप्ताह पूर्व शीघ्र पाचक चारे (चोकर, अलसी की खली) देकर दाने की मात्रा बढ़ाये।

प्रश्न गर्भावस्था पूरा होने के क्या लक्षण है?

उत्तर अयन बढ़ने लगता है, योनिमार्ग में सूजन आती है, तथा योनि मुख के पास की बनावट ढीली पड़ती है, पशु को बेचैनी महसूस होती है, पशु अकेले रहना पसंद करता है।

प्रश्न बछड़ा–बछिया का जन्म के समय देखभाल कैसे करना चाहिए?

उत्तर बछड़ा–बछिया के नथुने तथा मुँह को साफ करे, बछड़े को अलग रखे, खीस, दूध पिलाये।

प्रश्न बछड़ा–बछिया का सींग रोधन कब करे?

उत्तर बछड़ा–बछिया का जन्म के पश्चात् 10 दिन के अंदर सींग रोधन करना चाहिए।

प्रश्न बछड़ा–बछिया के बाह्य परजीवी की रोकथाम के लिये क्या करना चाहिए।

उत्तर बछड़ा–बछिया के शरीर पर कीटनाशक औषधि का छिड़काव करें।

प्रश्न बछड़ा–बछिया के पेट के अंदर परजीवी कीड़े होने पर क्या करना चाहिए?

उत्तर बछड़ा–बछिया को पिप्राजीन या उचित कृमिनाशक औषधि पिलाकर पेट के अंदर के कीड़ों को मारा जाता है

प्रश्न बछड़ा–बछिया को खुरपका–मुँहपका और गलघोटू का टीका कब लगवाना चाहिये?

उत्तर 1½ महीने का होते ही पहले उसे खुरपका–मुँहपका रोग प्रतिरोधक टीका लगवाना चाहिए और 6 महीने का होने के बाद गलघोटू का टीका लगाना जरूरी होता है।

7. कार्य निर्धारण (Assignments Based on Unit)

1. आपके क्षेत्र में उपलब्ध गाभिन गाय के आहार की सूची बनाए।
2. गाय के ब्याने से पहले लक्षणों की जानकारी गाय को देखकर बताएँ।
3. गाय के जेर के रूकने पर बरती जाने वाली सावधानियों का उल्लेख करें।
4. नवजात बछड़ों तथा बछियों के आहार की विभिन्न अवस्थाओं का विवरण दें।
5. बछड़ा–बछिया के संक्रामक रोग, टीकाकरण के बारे में बताएँ।

निर्देश : इकाई के अन्दर दी गयी सामग्री को संदर्भ के रूप में प्रयोग करें।

8. क्या करे क्या ना करे (Do's and Don't)

क्या करे

- प्रसव के समय पशुचिकित्सक की मदद लें।
- प्रसव के समय गुब्बारा फुटने की पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा करें।
- जेर निकलने की पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा करें।
- प्रसव के समय एक घंटे के भीतर नवजात बछड़ा–बछिया को खड़ा कर दें।
- बोतल में दूध लेकर बछड़ा–बछिया को पिलाये।
- बछड़ा–बछिया को सुरक्षित स्थान पर रखें।
- बछड़ा–बछिया की दूध की मात्रा धीरे–धीरे कम करके उसके स्थान पर दाना मिश्रण (काफ स्टार्टर) तथा हरा चारा दें।
- बछड़े को जन्म के पश्चात् दो घण्टे के भीतर खीस पिलाएँ।
- नाभि–नाल पर टिंचर आयोडीन तीन–चार दिन तक लगाएँ।
- बछड़े को वजन का 10 प्रतिशत दूध दिन में तीन बार में पिलाएँ।

क्या ना करे

- प्रसव के समय यदि बछड़े का एक पैर योनि से बाहर आया हो और मुँह दिखाई दे रहा है तो उसे खींचने की कोशिश न करें।
- प्रसव के समय सर्वप्रथम पानी का गुब्बारा आता है उसे फोड़ने का प्रयास न करें।
- बच्चा निकलने के बाद जेर निकलती है, उसे खींचने का प्रयास न करें।

- प्रसव के बाद पशु को बैठने न दें।
- बछड़े को कभी भी गर्दन अधिक ऊपर करके दूध न पिलाएँ।
- जन्म के पश्चात् बछड़ा–बछिया को कभी भी एकान्त स्थान पर न रखे।
- बछड़ा–बछिया के खान–पान में एकाएक परिवर्तन न करें।
- बछड़े को अधिक देर तक बिना खीस पिलाए न रखें।
- बछड़े की नाभि नाल को खुला न रखे।
- बछड़ा–बछिया के वजन का दस प्रतिशत दूध एक ही बार में न पिलाएँ।

9. शब्दावली (Glossary of Terms)

प्रसव काल	गर्भावस्था की अवधि
बच्चादानी	गाय का गर्भाशय
जेर	बच्चा अपने गर्भकाल मे इन्हीं झिल्लियों से मादा से जुड़ा रहता है, इसे जेर कहते हैं।
तेलीय खलियॉ	तेल मिलों से निकला हुआ अवशेष
खीस	बच्चे को जन्म देने वाली गाय का पहले 4 दिन का दूध
दाना मिश्रण (काफ स्टार्टर)	छोटे बछड़े के लिये बनाया हुआ विशेष खाद्य पदार्थ
सींग रोधन	छोटे आयु मे बछड़े के सींग को बढ़ने से रोकना
किलनी की रोकथाम	बाह्य परजीवी जंतु जो जानवर के शरीर पर होते हैं उन्हें नष्ट करना
कृमिनाशक औषधि	पेट के कीड़ों को मारने की दवा
टीकाकरण	संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिये उपयुक्त दवा देना
गर्भाशय का बाहर निकलना	गर्भाशय का भाग योनि मार्ग से लटकना
इन्फेक्शन Infection	संक्रमण
डीवार्मिंग Dewarming	पेट के कीड़ों को मारना
रिटेन्ड प्लेसेन्टा Retained Placenta	रूका हुआ जेर
मेट्राइटिस Metritis	गर्भाशय शोध
पायोमेट्रा Payometra	गर्भाशय में पश (मवाद) आना
बछड़ा–बछिया	पशु का नर व मादा बच्चा

क्षेत्र परीक्षण
FIELD TESTING

ग्रामीणों के उत्थान में सहायता मिलेगी : किसान

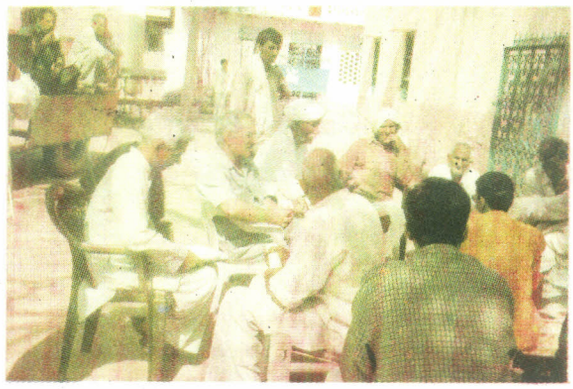

इकाई के अध्ययन के बाद अपने विचार व्यक्त करते पशुपालक

गाभिन पशु एवं बछड़ा–बछिया की देखभाल शीर्षक पर आधारित यह इकाई पढ़कर **कृ**षकों को काफी हर्ष हुआ। पशुपालकों का कहना है कि सामान्यता दूध देने वाले पशु की देखभाल ज्यादा की जाती है जबकि गाभिन पशु पर कम ध्यान दिया जाता है, इस इकाई को पढ़ने से यह स्पष्ट होता हैं कि गाभिन पशु पर भी अधिक ध्यान देना चाहिए। इस इकाई का परीक्षण दिल्ली, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश राज्य के पाँच गांवों में किया गया। इकाई को लगभग 20-25 **कृ**षकों के बीच पढ़कर सुनाया गया।

इकाई के अध्ययन के उपरान्त क षकों ने बताया कि उन्हें कुछ बातों की जानकारी है लेकिन इकाई में समहित अन्य वैज्ञानिक जानकारी काफी उपयोगी एवं लाभप्रद है। पशुपालकों ने कुछ तकनीकी शब्द जैसे प्रसूती आदि को आम बोल–चाल की भाषा में करने की इच्छा जताई। **कृ**षकों के सुझाव पर इकाई में प्रसूती के स्थान पर ब्याना एवं बच्चा देने जैसे शब्द का समावेश कर दिया गया। पशुपालकों का कहना है कि इस इकाई से वैज्ञानिक एवं तथ्यपरक ज्ञान प्राप्त होता है, इसका अध्ययन कर पशुपालक अपने व्यवसाय को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करेंगे।

इकाई के अध्ययन करने वाले किसानों से प्रतिक्रिया एवं सुझाव आमंत्रित हैं **कृ**षक अपने विचार से पत्र व्यवहार के जरिये हमें अवगत करा सकते हैं। पशुपालकों के महत्वपूर्ण विचारों से हमें भविष्य में इस इकाई को संशोधित करने सम्बन्धी सहयोग प्राप्त होगा। पशुपालक निम्न पते पर पत्र भेजकर हमें अपने सुझाव से अवगत करा सकते हैं।

पत्र व्यवहार का पता:--

निदेशक, कृषि विद्यापीठ
डेक बिल्डिंग, प्रथम तल
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

NOTES

डेयरी फार्मिंग जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित आकर्षक इकाईयाँ

1. परिचय
2. पशु प्रजनन
3. जनन
4. गाभिन पशु एवं बछड़ा-बछिया की देखभाल
5. पशु पोषण, आहार एवं चारा प्रबन्धन
6. दुग्ध उत्पादन
7. दुग्ध परीक्षण, रखरखाव एवं भण्डारण
8. पशु आवास
9. स्वास्थ्य प्रबन्धन
10. पशु रोग, रोकथाम एवं नियंत्रण
11. गोबर तथा डेयरी अपशिष्ट का निस्तारण
12. डेयरी फार्म के उपकरण
13. डेयरी फार्म अर्थशास्त्र एवं लेखांकन
14. डेयरी विकास में विभिन्न अभिकरणों की भूमिका

IG-MPDD/P.O. 1T/April, 2005

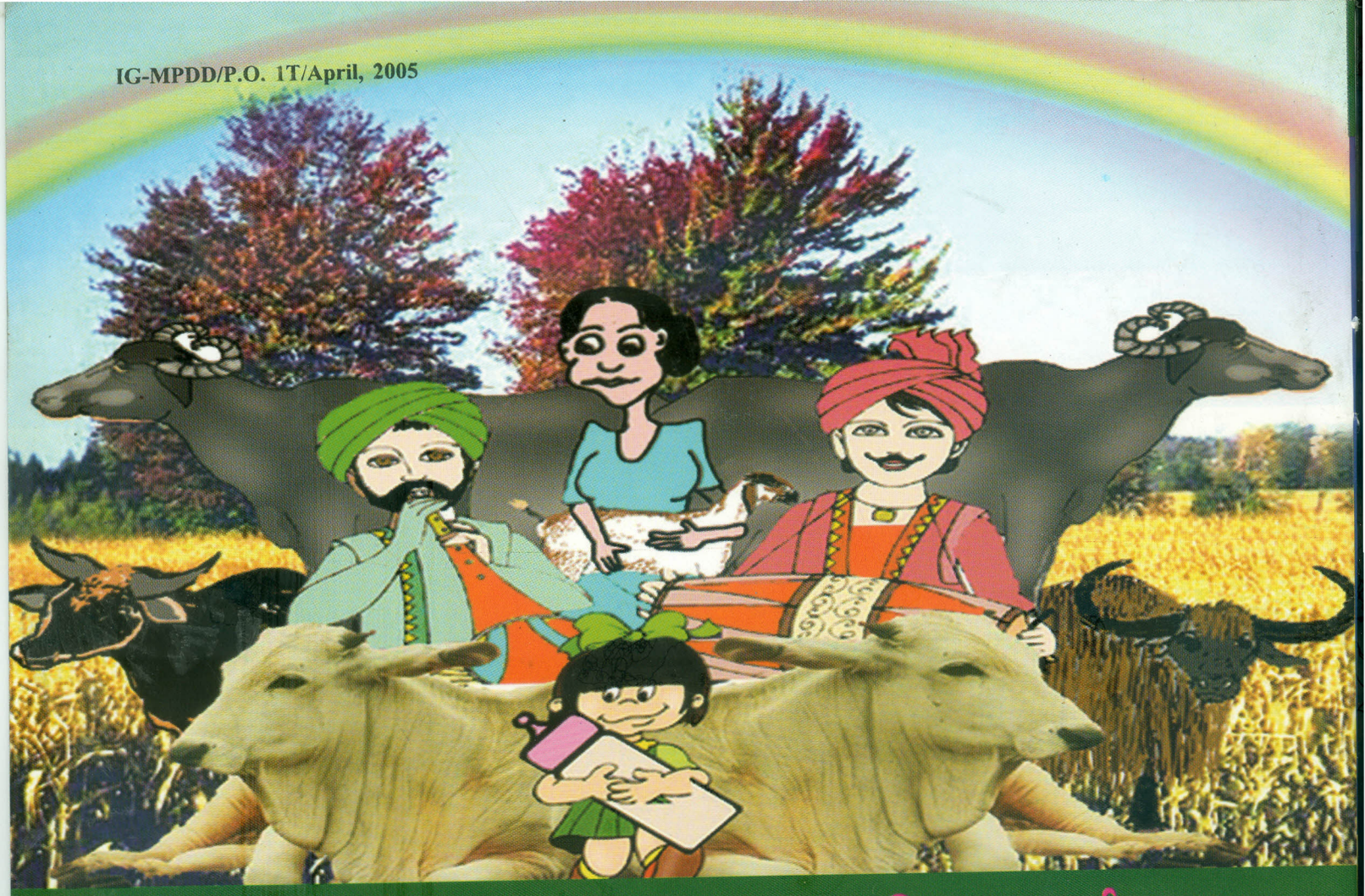

कृषि विद्यापीठ द्वारा अन्य प्रस्तावित कार्यक्रम

जागरूकता कार्यक्रम

फल एवं सब्जियों से मूल्यवर्धित उत्पाद

डिप्लोमा कार्यक्रम

फल एवं सब्जियों से मूल्यवर्धित उत्पाद
डेयरी प्रौद्योगिकी
मांस प्रौद्यागिकी
जलग्रहण क्षेत्र प्रबन्धन

स्नातकोत्तर कार्यक्रम

कृषि नीति (प्रमाणपत्र, डिप्लोमा एवं उपाधि)

कृषि विद्यापीठ का सम्पर्क सूत्र :
निदेशक,
कृषि विद्यापीठ
डेक बिल्डिंग
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068
टेलीफैक्स - (011) 29534104, 29531887

ISBN-81-266-1710-1